लटके चटके छटके दोडजो, रखे पग पाछां देतां।
हांसी छे घणी ए रामतमां, दोड तणो रस लेतां।।७।।

लटकती, चटकती और छटकती चाल से दौड़ना। पांव पीछे नहीं हटाना। इस रामत में दौड़ने का ही आनन्द है और हंसी है।

कहे इंद्रावती ए रामतडी, मारा वालाजी थई अति सारी।
दोड करता तमे पाछूं नव जोयुं, अमे बांहोंडी न मूकी तमारी।।८।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे वालाजी! यह रामत बहुत अच्छी हुई है। दौड़ते समय आपने पीछे नहीं देखा और हमने भी आपकी बांह नहीं छोड़ी।

।। प्रकरण ।। २० ।। चौपाई ।। ५१६ ।।

राग श्री काफी

रामत करतालीनी रे, एमा छे वलाका विसमा।
बेसवूं उठवूं फरवूं रमवूं, ताली लेवा साम सामा।।१।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हाथ से ताली बजाकर रामत करने में दावपेंच कठिन हैं। इसमें—बैठना, उठना, फिरना, खेलना और आमने-सामने आकर ताली बजाना है।

तम सामी अमे ऊभा रहीने, हाथ ताली एम लेसूं।
बेसंता उठता फरता, सामी ताली देसूं।।२।।

हे वालाजी! आपके सामने खड़े होकर मैं हाथ की ताली लूंगी, फिर बैठकर, उठकर, घूमकर, फिर सामने आकर ताली दूंगी।

बेसंता ताली दईने बेसिए, उठंता लीजे ताली।
फरता ताली दई करीने, वचे रामत कीजे रसाली।।३।।

बैठते समय ताली देकर बैठना है और उठते समय ताली लेकर उठना है। घूमते समय ताली देकर घूमना है। इस प्रकार की रामत सबके बीच में खेलूंगी।

रामत करता अंग सहु वालिए, सकोमल जोड सोभंत।
अंग वाली वचे रंग रस लीजे, भंग न कीजे रामत।।४।।

खेलते समय सब अंग मोड़िए। इस तरह से सुन्दर जोड़ी शोभा देगी। अंग मोड़ते समय खेल में आनन्द लीजिए और खेल में भी रुकावट नहीं आवे।

ए रामतडी जोई करीने, सहु साथने वाध्यो उमंग।
सहु कोई कहे अमे एणी पेरे, रमसूं वालाजीने संग।।५।।

इस रामत को देखकर सब सुन्दरसाथ के मन में खेलने की उमंग बढ़ गई तथा सब कहने लगीं कि हम भी इस प्रकार वालाजी के साथ खेलेंगे।

साथ कहे वाला रमो अमसूं, ए रामत सहु मन भावी।
सहुना मनोरथ पूरण करवा, सखी सखी प्रते लेओ रंग आवी।।६।।

सब सखियां कहने लगीं, हे वालाजी! हमारे साथ भी खेलो। यह खेल सबको अच्छा लगा है, इसलिए सबकी इच्छा पूरी करने के लिए एक-एक सखी से आनन्द लो।

Nijanand App

हाथ ताली रमे छे वालो, सघलीसूं सनेह।
रंगे रमाडे रासमा, वालो धरी ते जुजवा देह।।७।।

वालाजी हाथ की ताली का खेल सबसे प्रेम से खेलते हैं। बड़ी उमंग और आनन्द के साथ सबको रास खिलाने के लिए जुदा-जुदा तन धारण किए।

कहे इंद्रावती ए रामतडी, मारा वालाजी थई अति सारी।
सघली संगे रमिया रंगे, एक पिउ एक नारी।।८।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि वालाजी के साथ में यह रामत बहुत ही अच्छी हुई। वालाजी ने रामत में एक-एक गोपी एक-एक श्याम का रूप धारण कर सबके साथ आनन्द से रामतें खेलीं।

॥ प्रकरण ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ ५२४ ॥

राग केदारो–चरचरी

उमंग उदयो साथ, रंगे तो रमवा रास।
रासमां करूं विलास, सखियो सुख लेत री।।१।।

सुन्दरसाथ के मन में रास खेलने की उमंग और बढ़ गई है। रास के बीच में विलास के सुख लेती हैं।

भोमनी किरण भली, आकासे जईने मली।
चांदलो न जाए टली, उजलीसी रेत री।।२।।

वृन्दावन की भूमि के तेज की किरणें आकाश तक जा रही हैं। चन्द्रमा की गति रुक गई है और रेत चमक रही है।

रुत निस नवो सस, दीसे सहु एक रस।
प्रकासियो दसो दिस, न केहेवाय संकेत री।।३।।

मौसम, रात्रि तथा नया चन्द्रमा सब एक ही रस में मग्न हो गए हैं। दसों दिशाओं में इनकी रोशनी फैल रही है। हम तनिक भी इनकी विवेचना नहीं कर सकते।

सूं कहूं वननी जोत, पत्र फूल झलहलोत।
वृंदावन उद्योत, सामग्री समेत री।।४।।

वन की ज्योति के तेज का वर्णन कैसे करूं? पत्ते और फूल भी जगमगा रहे हैं। इस प्रकार वृन्दावन सम्पूर्ण सामग्री सहित जगमगा रहा है।

पसु पंखी अनेक नाम, तेना विचित्र चित्राम।
निरखतां न भाजे हाम, जुजवी जुगत री।।५।।

पशु-पक्षियों के अनेक नाम हैं। इनके रूप चित्र-विचित्र हैं। इनको देखकर चाहना पूर्ण नहीं होती है। सब भांति-भांति युक्ति के हैं।

रमतां भूखण किरण, ब्रह्मांड लाग्यो फिरण।
सखियो उलासी तन, कमल विकसेत री।।६।।

खेलने में आभूषणों की किरणें उठती हैं तो ऐसा लगता है कि योगमाया का ब्रह्माण्ड ही घूम रहा है। सखियों के तन उमंग से भरे हैं जैसे कमल के फूल खिल गए हों।

Nijanand App